



4th semester Gestalt Psychology

Max
wertheimer



Dr. Amar sir PSY (Assistant professor) **AND College**



Poster Maker

Gestalt Psychology :-

गैस्टाल्ट मनोविज्ञान एक समुदाय या स्कूल है मनोविज्ञान का, जिसने ~~जर्मनी~~ जर्मनी में ~~1920s~~ 1920s के दशक में शुरू किया। इसके साथ तीन और लोग जुड़े कोह्लर, कौफका, कर्ट लेविन, इन लोगों के सहयोग से वर्कडमर ने अभासीय गति पर कई महत्वपूर्ण प्रयोग किए हैं। कोह्लर तथा कौफका इस स्कूल के सहसंस्थापक हैं, जहाँ वर्कडमर के उक्त प्रयोगों से प्रयोज्य का भी काम कर चुके हैं।

वर्कडमर का जन्म जर्मनी में सन 1880 ई में हुआ था। वे वहाँ कानून का अध्ययन किए लेकिन फिर वे मनोविज्ञान में आ गए, वे कूलर के निर्देशन पर वर्जवर्ग विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि प्राप्त किए।

वर्कडमर की अभिरुचि गति प्रत्यक्षण के अध्ययन में थी उनके सामने समस्या यह थी कि ऐसे उदीपक जो वास्तव में गतिहीन हैं, इनके प्रत्यक्ष प्रत्यक्षण को संवेदन का तत्व मानते हुए गति प्रत्यक्षण की व्याख्या किस तरह की जा सकती है।

कहानी इस प्रकार शुरू होती है कि लुई के दिनों में रेलगाड़ी से विधाना से जर्मनी जा रहे थे, वह बीच रास्ते में ही फ्रैंकफर्ट पर उतर गए और नक्ली स्ट्रोवोस्कोप खरीद लिए। स्ट्रोवोस्कोप एक ऐसा यंत्र है जिसके सहारे स्थिर वस्तुओं की उस तरह वैकल्पिक रूप से अनावृत्ति अनावृत्त किया जाता है कि देखने वाला व्यक्ति को उसमें गति का अनुभव होता है। इस स्ट्रोवोस्कोप के सहारे वे कई प्रयोग किए अंत में निष्कर्ष निकाला गया कि जो व्यक्ति प्रत्यक्षण करता है उसका तालमेल पर्यावरण या वस्तुओं के हालातों या वस्तुओं से नहीं हो सकता है। गैस्टाल्ट मनोविज्ञान की स्थापना के पिछे इस विचार का महत्व-सबसे अधिक रहा है।

Wolfgang Kohler

कोहलर का जन्म सन् 1887 ई में इटलीमिया में हुआ तथा 1909 में वे स्टम्फ के निर्देशन पर बर्लिन विश्वविद्यालय से Ph.D. की उपाधि प्राप्त किया। इसके बाद वह फ्रैंकफर्ट चले गए जहाँ उनकी मुलाकात वर्कहोफ से हुई। फिर उन्होंने टेनेराईफ द्वीप चले गए जहाँ वे बंदरों एवं वनभावुष पर गंभीरता से अध्ययन किया।

उन्होंने सुलतान नाम के चिन्पेंजी पर प्रयोग किया और कहा कि कोई जरूरी नहीं है कि व्यक्ति जहाँ वह खाना खाए वही सीखता है उनके अंदर स्मृति भी तो हो सकती है और स्मृति इसीलिए हो सकती है क्योंकि उसके अंदर हिमाग भी तो है।

उन्होंने सुलतान नाम के चिन्पेंजी को एक कमरे में बंद कर दिया, और उसी कमरे में छत से लगाकर कैला की बोख दिया गया साथ ही उसी कमरा में खे डंडे भी रख दिया गया।

अब प्रयोग शुरू हुई और चिन्पेंजी उसके ही खाने के लिए उछल-छूफ करने लगा। फिर अचानक उसके हिमाग में एक स्मृति आई और दोनों डंडे को जोड़कर छत से लगे कैला को बंध नीचे गिराने लगा और कैला उतार कर खा लिया। इस सिद्धांत को Insightful Learning के नाम से जानी है जिसका वर्णन कोहलर ने अपने Book *Mentalism of Apes* में प्रस्तुत किया था।

Basic experimental contributions of Gestalt psychology.

गोस्टाल्ट मनोविज्ञान के मूल प्रयोगात्मक योगदान :-

आरम्भ में गोस्टाल्ट मनोविज्ञान का योगदान सिर्फ प्रत्यक्ष के क्षेत्र तक ही सीमित रहा। परंतु बाद में इस मनोविज्ञान द्वारा अन्य क्षेत्रों में जैसे - सीखना, चिंतन, स्मृति, इत्यादि में सक्रिय योगदान किये गए। इन क्षेत्रों में गोस्टाल्ट मनोविज्ञान द्वारा किये गए योगदानों का वर्णन निम्नांकित हैं।

⇒ 1. प्रत्यक्ष (Perception) :- गोस्टाल्ट मनोविज्ञान का महत्व मनोविज्ञान के सभी स्कूलों से अधिक है क्योंकि प्रत्यक्ष के क्षेत्र में दिये गए योगदान काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ है। इनके द्वारा दिये गए योगदानों का वर्णन निम्नांकित पाँच भागों में बाँटकर किया जा रहा है।

(i) अंश-समग्रता मनोविज्ञान :-

(ii) प्रत्यक्षतात्मक संगठन के नियम :-

(iii) वस्तु स्थिरता :-

(iv) क्षेत्र भित्ति गतिकी :-

~~वस्तु के~~ ~~कार्य~~ ~~वस्तु~~ के नियम :-

(i) अंश-समग्रता मनोविज्ञान :- गोस्टाल्ट मनोविज्ञानियों ने यह स्पष्ट किया है कि समग्रता और इसके अंश के प्रत्यक्ष में अंतर होता है। प्रत्यक्षतात्मक समग्रता के दो विशेषताएँ हैं। - पहला - यह प्रत्यक्षतात्मक समग्रता एक तरह से संगठित समग्रता है, न कि संघटीत का मात्र गुच्छा। इसकी तोरने पर नया चीज उत्पत्ति हो जाएगी न कि अंश की विशेषता की उत्पत्ति। दूसरा यह प्रत्यक्षतात्मक समग्रता प्रत्यक्ष से ही मिलती है। अतः प्रत्यक्षतात्मक समग्रता सिर्फ समग्रता ही नहीं है बल्कि प्रत्यक्ष समग्रता भी होती है।

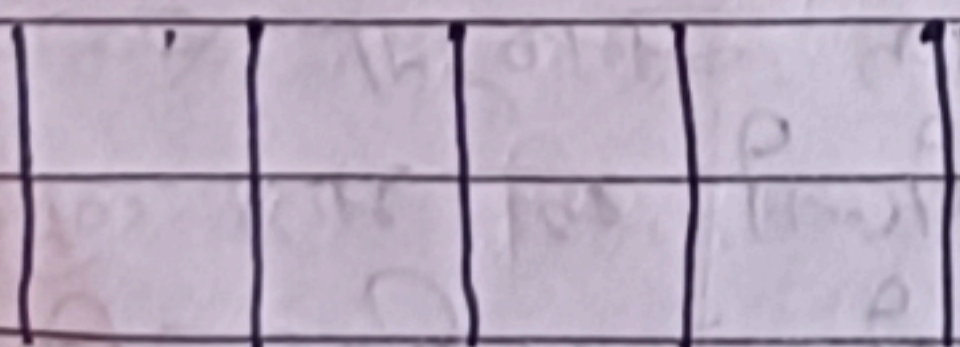
4) प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम :- गैस्टाल्ट मनो वैज्ञानिकों द्वारा कुछ नियम का प्रतिपादन किया गया है जिसमें प्रत्यक्षणात्मक समग्रता का निर्धारण होता है वही हम का मत था कि प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम जन्मजात होते हैं इसीलिए इसे मूल संगठन के नियम भी कहा जाता है इन नियम के माध्यम से गैस्टाल्ट मनो वैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षणा में सीखने की भूमिका को कम किया है, ऐसे कुछ महत्वपूर्ण नियम का वर्णन निम्नांकित है।

(क) समानता का नियम :- यह नियम इस बात पर बल डालता है कि वैसे वस्तु जिनकी संरचना समान होती है, उसे व्यक्ति एक साथ संगठित कर एक प्रत्यक्षणात्मक समग्रता के रूप में प्रत्यक्षणा करता है।



इस चित्र में हम देखते हैं कि काले बिंदुओं से बने एक त्रिभुज है, जिसका मात्र कारण है कि काले बिंदु समान हैं।

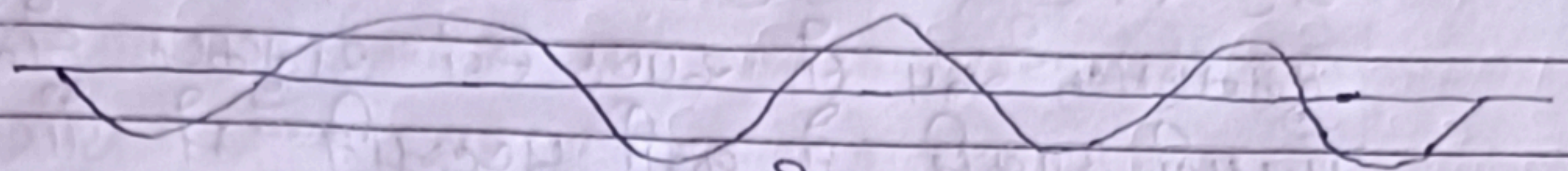
(ख) समीप्यता समीप्यता का नियम :- इस नियम के अनुसार वे सभी व्यक्ति वस्तुएँ जो समय तथा स्थान में एक दूसरे से नजदीक होती हैं।



यह चित्र इसी नियम पर अवधारित है इस चित्र में स्पष्ट है कि व्यक्ति लम्ब रेखाओं का

गिन जाँड़ा देखता है ना कि अलग अलग लम्ब रेखा देखता है क्योंकि सभी लम्ब एक दूसरे से नजदीक हैं।

(c) निरन्तरता का नियम :- इस नियम के अनुसार जिन वस्तु में एक दिशा में आगे बढ़ते रहने की निरन्तरता बनी रहती है, उसे व्यक्ति एक संगठित आकृति वाला तस्वीर के रूप में प्रत्यक्ष करता है।



हल्कादार रेखा

इसमें हल्कादार रेखा का प्रत्यक्ष हुआ है इस कारण हल्कादार रेखा एक निश्चित दिशा में निरन्तर चलती रहती है।

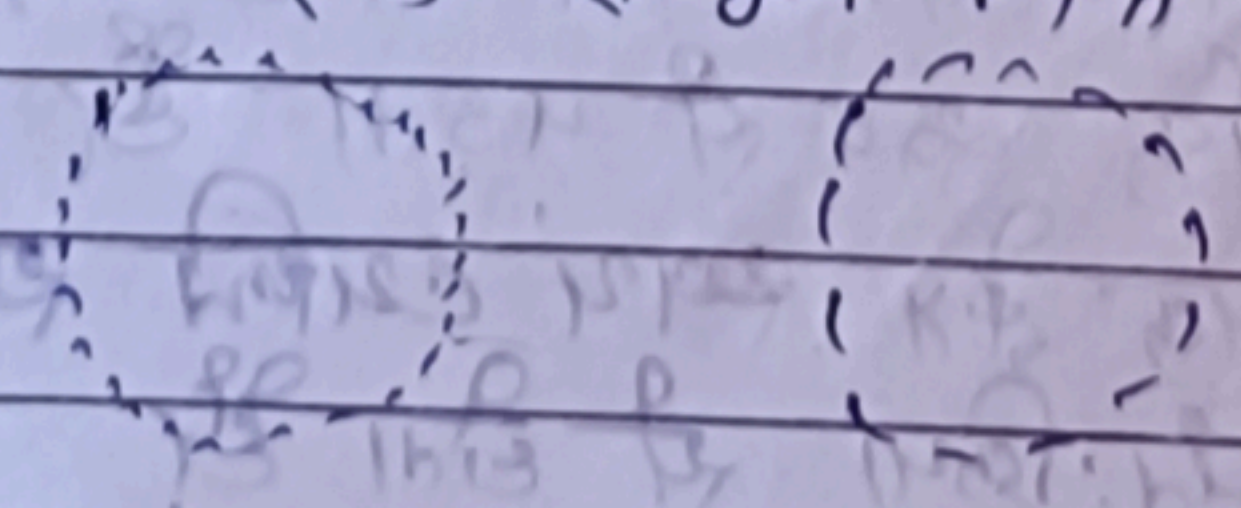
(d) वस्तुनिष्ठ सैट का नियम (Principle of objective set)

इस नियम के अनुसार यदि व्यक्ति वस्तु के किसी विशेष पैटर्न पर देखता है तो उससे एक तरह का मानसिक सैट उत्पन्न हो जाता है और उस सैट के कारण उद्दीपक पैटर्न में थोड़ा परिवर्तन के बाद भी व्यक्ति वस्तु की पहचान के समान ही देखता है।

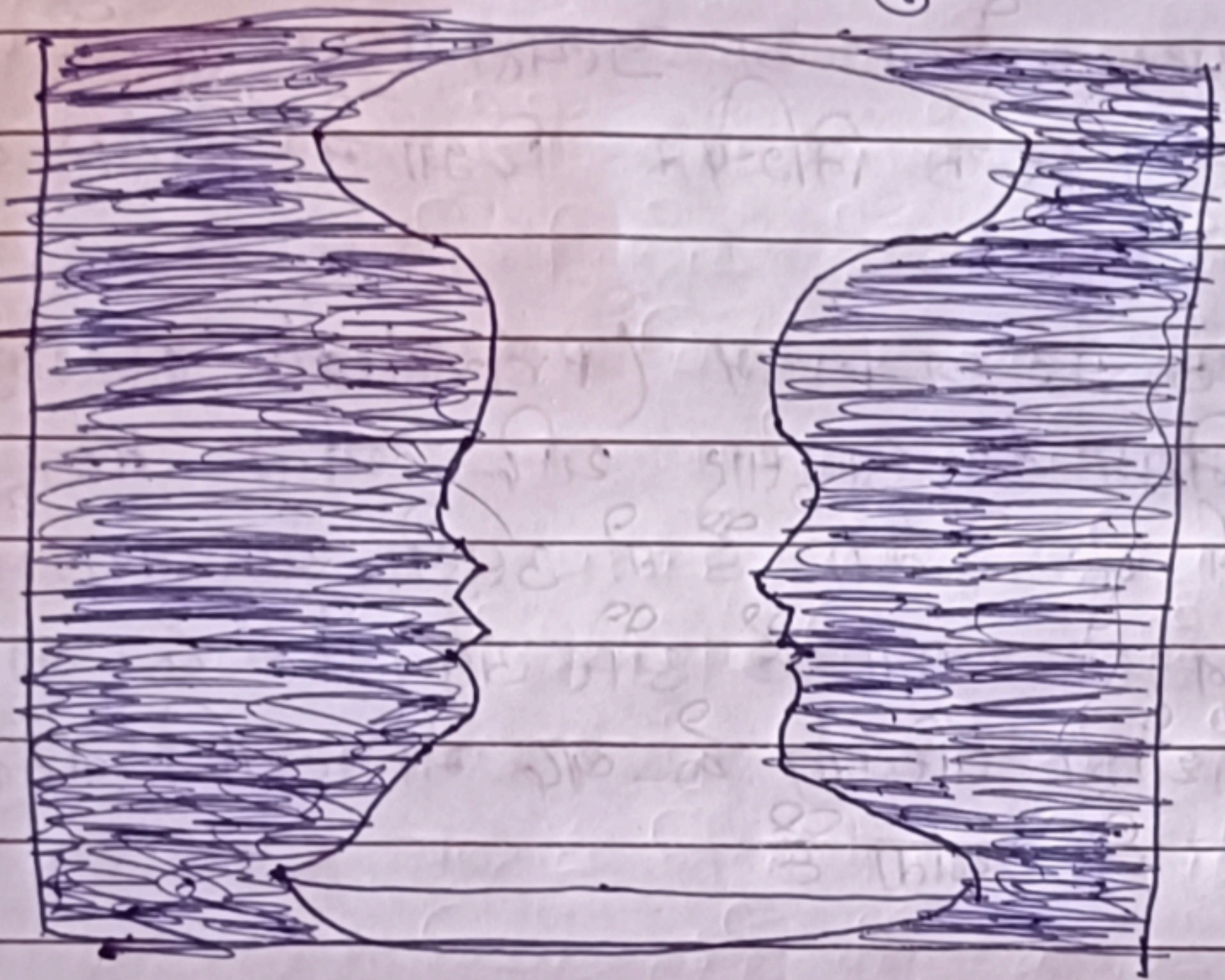
00 00 00 00 0000000000

यहाँ बायीं ओर 0 की आपसी दूरी समान है, और दायीं ओर 0 की दूरी को एक साथ करके दिखाया गया है। जब आगे बढ़ते हैं तो उसे भी दो दो के समान ही देखते हैं।

(e) संस्मृति का नियम :- सच पूछा जाए तो यह नियम असल में आकृति के नियम का ही एक हिस्सा है इस नियम द्वारा यह पता चलता है कि जब प्रत्यक्षगोचर वस्तु के कुछ अंश को अथुरा जोड़ दिया जाता है तो व्यक्ति उसे अपने ओर से पूरा करके एक सम्पूर्ण चित्र के रूप में देखता है।



(i) आकृति एवं प्रत्यक्षता का नियम :- यह नियम इस बात पर बल डालता है कि प्रत्यक्षता किसी आकृति के रूप में संगठित हो जाती है, जो एक निश्चित प्रत्यक्षता पर दिखाई देती है आकृति का एक मुख्य गुण यह है कि यह स्पष्ट एवं उल्लेख होता है, तथा प्रत्यक्षता तुलनात्मक रूप से स्पष्ट एवं अनुल्लेख होती है, पलटती आकृति में कभी प्रत्यक्षता में और प्रत्यक्षता कभी आकृति रूप में पलटती हुई दिखाई पड़ता है



(ii) वस्तु स्थिरता :- प्रत्यक्षतात्मक संगठन के इन विभिन्न नियमों के आवार पर गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा एक सामान्यीकरण यह किया गया कि व्यक्ति जिस वस्तु का प्रत्यक्षता करता है उसे विभिन्न आयामों से देखने के बावजूद भी एक समान ही देखा जाता है इसे प्रत्यक्षतात्मक स्थिरता कहते हैं।

(iii) क्षेत्र तात्त्विकता :- गेस्टाल्टवादियों का क्षेत्र से मतलब एक ऐसा वातावरण तंत्र से होता है जहाँ किसी एक भाग में परिवर्तन होने का प्रभाव दूसरे भाग पर भी सार्थक रूप से पड़ता है मनोवैज्ञानिक अनुभवों का वातावरण क्षेत्र स्वयं व्यक्ति एवं पर्यावरण के साथ किए गए अंतःक्रिया से होता है।

2. सीखना :- Learning :- गैस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने सीखने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। सीखने में एक तरह का प्रत्यक्षमात्मक संश्लेषण होता है तथा व्यक्ति परिस्थिति को नये ढंग से देखता है। इन लोगों ने भी स्पष्ट किया कि प्राणी सूझ द्वारा सीखता है क्योंकि उसके अंदर दिमाग भी मौजूद होता है।

3. चिन्तन (Thinking) :- सीखने के प्रति गैस्टाल्ट वादियों के जो विचारधारा थी उसका उपयोग चिन्तन अध्ययन के क्षेत्र में भी किया गया, वर्कडमर ने छोटे-छोटे बच्चों की ज़रूरतों को लेकर उनकी चिन्तन का अध्ययन किया, और बच्चों के द्वारा किए गए प्रयोग को प्रोडक्टिव थिंकिंग बुक में प्रकाशित किया, इनका मत था कि समस्या के समाधान करने समय जो प्रतिक्रिया होती है वह उत्तम प्रतिक्रिया होती है, वर्कडमर ने स्पष्ट किया है कि चिन्तन में प्रयास एवं प्रतीति का स्थान नहीं होता है। उसका चिन्तन किसी समस्या को लेकर हमेशा संपूर्ण काम करता है।

4. स्मृति :- गैस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्मृति के क्षेत्र में प्रत्यक्षमात्मक के नियमों का उपयोग किया गया है। उस समय स्मृति का एक प्रचलित सिद्धांत यह था कि जब व्यक्ति किसी वस्तु या चीज का प्रत्यक्षमात्मक करती है तो वह उसका प्रत्यावाहन भी करता है और अगर याद रहता है तो इसका कारण यह है कि व्यक्ति के दिमाग में किसी उद्दीपक का स्मृति चिह्न बन जाता है, और जब यह स्मृति चिह्न किसी नया चीज से मिल जाता है तो व्यक्ति उस चीज को याद करता है।